# वाल्मिकि जयंती

**डॉ. रामदेव साहू**
पूर्व विभागाध्यक्ष, राजकीय संस्कृत कॉलेज, कालाडेरा, जयपुर

**अत्यंत** हर्ष का विषय है कि महर्षि है कि वाल्मीकी के जन्मोत्सव पर संस्कृत विभाग मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर एवं राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर तथा विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान कीर्ति नगर जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में सप्तदिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन किया जा रहा है। आज इस कार्यक्रम में हमारे समक्ष विद्यमान हैं आशीर्वाद प्रदाता के रूप में माननीय विश्वगुरू श्री महेश्वरा नन्द जी महाराज एवं संरक्षक के रूप में माननीय कुलपति महोदया डॉ अमरिका सिंह जी, कार्यक्रम के अध्यक्ष सीमा मलिक महोदया, उपाध्यक्ष महोदय स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी जी एवं सप्त दिवसीय व्याख्या माला के अध्यक्ष देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी। आज के व्याख्यान का विषय है वाल्मीकी रामायण का उपजीवत्व। महर्षि वाल्मीकी रामायण महाकाव्य के रचयिता के रूप में सुप्रसिद्ध रहे हैं और रामायण आर्ष काव्यों में सबसे प्राचीनतम् ऐसा काव्य है जिसे आधार बनाकर अब तक निरन्तर अनेक काव्यों महाकाव्यों, नाटकों, गीतिकारों आदि की रचना कवियों द्वारा की जाती रही है। वाल्मीकी रामायण जिसे वाल्मीकी की अमर कृति कहा जाता है और जिसमें भारतीय धर्म संस्कृति, सभ्यता सब का चित्रण भली भाँति हुआ है। उसका मूल उद्देश्य वाल्मीकी के रचना का जो आधार है जो मन मानस वाल्मीकी का था वह मन मानस किसी प्रकार के न तो आदर्शवाद  से प्रभावित था न यथार्थवाद से प्रभावित था।

वाल्मीकी ने अपने राम के चरित्र को उपस्थापित किया है लेकिन हमारी संस्कृति के अनुरूप हमारे जो आदर्श हैं ,परम्पराएँ हैं उनके अनुरूप हमने उसका अध्ययन किया है। भारतीयों ने आदर्शवाद की दृष्टि से उसके अध्ययन को भली भाँति समझा है। पाश्चात्य जिनका अध्ययन रामायण का है  वो उसमें यथार्थवाद का भी अन्वेक्षण करते है। अतः कतिपय विषयों पर उनकी आलोचनाएं समालोचनाएं भी प्रस्तुत हुई हैं। लेकिन ये विषय आलोचना का नहीं है। महर्षि वाल्मीकी का दृष्टिकोंण नितान्त मानववाद का रहा है। उन्होंने मानवीय दृष्टि से इस महाकाव्य की रचना की है। मानव को कैसा होना चाहिए यह शिक्षा हमें राम के चरित्र से प्राप्त होती है कि हम विशुद्ध रूप में मानव बनें। सत्य के पक्ष को उन्होंने सर्वाधिक उजागर करने की चेष्टा की है। वाल्मीकी रामायण द्वितीय काण्ड में भी इसकी उद्घोषणा की है -

**सत्यमेक पदमब्रह्मः सत्य धर्मः प्रतिष्ठितः।**

**सत्यमेवाक्षया वेदः सत्नाप्यते परम॥**

तात्पर्य ये है कि वाल्मीकी ने मानवता के अस्तित्व को स्थाई बनाने के उद्देश्य से इस महाकाव्य की रचना की है और यही कारण रहा है कि यह महाकाव्य सर्वग्राह्यता क सबसे श्रेष्ठ प्रमाण ये है महाकवि कालिदास से पूर्व से लेकर उदाहरण के लिए कालिदास से पूर्व नाटककार भास हुये और नाटककार मास ने अभिषेक नाटक और प्रतिमा नाटक अपने वाल्मीकी रामायण को ही आधार बनाकर लिखे हैं। तात्पर्य ये है कि कालिदास जिनकी हम महाकवियों में सबसे प्राचीन मानते है या संस्कृत के ऐसे शिरोमणि मानते है जो हमारे सर्वाधिक प्रशंसनीय है। उनसे पूर्व से ही राम काव्य इतना प्रशस्त महाकाव्य था जिसे आधार बनाकर के ग्रन्थों की रचना प्रारम्भ हो चुकी थी। कालिदास एक ऐसे महाकवि है जिन्होंने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं उनमें रामायण पर आश्रित महाकाव्य रघुवंश को प्रथम स्थान दिया जा सकता है। हालांकि उसमें रामकथा का वर्णन मध्यभाग में है और रघुवंश का ही पूरा वर्णन उन्होंने किया है लेकिन रघुवंश के प्रति जिस श्रृवधा की उत्पति हुई है क्योंकि उसके अभाव में जब तक इतनी श्रृवधा नहीं होती तब तक एक वंश को आधार बनाकर के महाकाव्य की रचना करना किसी के भी मनमानस में उत्पन्न नहीं हो सकता। महाकवि कालिदास ने इसको लक्ष्य बनाकर के रघुवंश महाकाव्य की रचना करना किसी के भी मनमानस में उत्पन्न नहीं हो सकता। महाकवि कालिदास ने इसको लक्ष्य बनाकर के रघुवंश महाकाव्य की रचना की।

रघुवंश महाकाव्य में कालिदास राम को ईश्वर का अवतार भी नहीं मानते और साधारण पुरूष भी नहीं मानते, उनके दिव्यत्व को उन्होंने स्वीकार किया है। जिस प्रकार से वाल्मीकी ने राम के दिव्यत्व का प्रदर्शन किया है प्रतिपादन किया है। जिस प्रकार से वाल्मीकी ने राम के दिव्यत्व का प्रदर्शन किया है प्रतिपादन किया है उसी ढंग से कालिदास ने उनके व्यक्तित्व को समझते हुए उसकी प्रस्तुति की है। अन्य पात्रों में सीता के प्रति कालिदास का प्रस्तुतीकरण वाल्मीकी की अपेक्षा अत्यन्त उज्जवल रहा है। सीता के चरित्र को उपस्थापित करने में उन्होंने राम से अधिक अपनी दृष्टि प्रदर्शित की है। सीता के चरित्र में सीता की सहिष्णुता का उन्होंने इस रूप में प्रतिपादन किया है कि भारतीय नारी की सारी मर्यादाएँ उससे जुडी प्रतीत होती है। रघुवंश में उन्होंने लिखा है-

**सीताम् हित्वा दशमुख रिपुर नोपमेये यदन्यां तस्या एव प्रतिकृत सखो।**

**यत्कृतो न जहार वृतान्तरे श्रवण विषय प्रापेण तेन**

**भर्तुः सादूर्वारं गतमपि परित्याग दुःखम् विषयेः।।**

सीता ने जो दुःख सहन किया वो नारी की सहन शक्ति को प्रदर्शित करता है कि भारतीय नारी कितनी सहिष्णु है? उसकी सहिष्णुता का मूल आधार हमारी सामाजिक मर्यादाएँ हैं और नारी का चरित्र है।

क्योंकि समाज नारी से ही बनता है। इसलिए नारी को सर्वाधिक चरित्रवान होना सर्वाधिकव मर्यादित होना अत्यन्त अपेक्षित है। यदि हम उसकी मर्यादाओं का उसकी सहिष्णुता का उल्लंघन करने की बात करेंगे तो नारी आदर्शमय नहीं रहेगी और नारी क्या पूरा समाज ही विनाश की ओर जायेगा। इसलिए कालिदास की जो दृष्टि रही है वो इस प्रकार की रही है वो इस प्रकार की रही है कि उन्होंने सीता को एक ऐसी महिला के रुप में प्रस्तुत किया है जो सर्वाधिक मर्यादा सम्पन्न है सर्वाधिक सहिष्णु है। नारी के समस्त गुण उसके चरित्र में विद्यमान है। लेकिन इससे यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि सीता को उन्होंने निर्बल बना दिया है। महिला सशक्तीकरण को उन्होंने रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया है। एक स्थान पर जहाँ सीता कहती है-

**वाचस्त्वया मद्वचनाद् राजा बन्नो विशुद्धधा यत् यत्समक्षम्।**
**मांलोवादस्य श्रवणोदः आसी श्रुतस्य किं सदृश्य कुलस्य॥**

यहाँ पर राम के लिए उन्होंने जिन शब्दों का प्रयोग किया है वो चिन्तन करने लायक है। राम के लिए उन्होंने राजा शब्द का प्रयोग किया है। अन्यत्र जहाँ भी वो आर्य शब्द का प्रयोग करती है, लेकिन यहाँ पर उसने ये कहा है कि उस राजा से ये कहना कि जो अग्नि में भी विशुद्ध हो चुकी है। पहले अब उसके लिए क्या बचा है? तात्पर्य ये है कि महिला इतनी निर्बल नहीं है। वो जागरूक है और मर्यादाओं के कारण ये नहीं समझना चाहिए कि वो महिला निर्बल है। ये हमारी मानवीय कमजोरी है जो मानव की कमजोरी पुरूष की कमजोरी है कि हम उसको अत्यधिक मर्यादित स्त्री को अत्यधिक गुण सम्पन्न स्त्री को हम निर्बल समझ लेते हैं। ये हमें नहीं समझना चाहिए। कालिदास की ये शिक्षा हमारे लिए हमारे समाज के लिए हमारे समाज के पुरूष वर्ग के लिए सर्वाधिक ग्राह्य प्रतीत होती है। कालिदास के बाद जिन्होंने रामायण पर आश्रित काव्य लिखा वे महाकवि कुमार दास।

यद्यपि कई व्यक्ति कुमार दास को कालिदास के समकालीन भी कहते हैं लेकिन कुमार दास छ्ठी शताब्दी के महाकवि हैं। इनका जानकी हरण महाकाव्य बहुत प्रसिद्ध रहा है जिसके लिए इन्होंने जानकी हरण में गर्भोक्ति भी की है कि - जानकी हरणं कर्तु रघुवंशे स्थिते सति कवि कुमारदासस्य रावणस्य

ये जानकी हरण महाकाव्य में जो विशेषताएँ हैं उसमें एक अवधारणा आ गई है जो ओर वो अवधारणा क्या आ

गई है वो है मुक्ति की अवधारणा। इन्होंने एक स्थान पर उल्लेख किया है कि -

**जानकी हरणं लक्षणं लक्षयणे हि बलक्षितम्।**
**रामायण सुधा सारं आस्वाद्य मुक्तिदाअकम् ॥**

इन्होंने रामायण को मुक्ति दायक कहा है। जिसका तात्पर्य ये है कि कवि कुमार दास से पहले भारतीय धर्म में वाल्मीकी रामायण की इतनी प्रतिष्ठा हो चुकी थी कि उसको मुक्ति दायक ग्रंथ मान लिया गया था। उसको मुक्ति दायक ग्रंथ मानने के कारण ही राम का ईश्वरत्व और अधिक उन्मुख होकर के हमारे सामने प्रस्तुत हुआ। इस राम के ईश्वरत्व का प्रस्तुतीकरण कुमारदास के बाद से प्रारम्भ होता है। इसके पहले के काव्यों में राम को साक्षात् ईश्वर नहीं कहा गया। वहाँ उनका ईश्वरत्व दिव्यत्व प्रदर्शित किया गया है। इन्हीं के बाद में उत्पन्न या कई लोग इनसे पहले मानते है - प्रवर सेन जिनको कई विद्वान चौथी शताब्दी का मानते है। प्रवरसेन का जो सेतु बन्ध महाकाव्य है वो भी रामायण पर आश्रित ऐसा महाकाव्य है जो विशेषता दी गई है वो भिन्न प्रकार की है। संस्कृत के आचार्यो में आचार्य आनन्दवर्धन ने रामायण में करूण रस स्वीकार किया है। उस कारण करूण रस को प्रदर्शित करने में प्रवर सेन ने अपना कृतित्व या कवित्व दर्शाया गया है। उसने राम की करूणा को इतने उत्कर्ष के साथ प्रस्तुत किया है। जितना संस्कृत के कवियों में नाटयकार भवभूति ही कर सके है। महाकाव्य कार नहीं कर सके है वाकि नाटयकार भवभूति ने उससे अधिक किया है। महाकाव्यों में एक मात्र प्रवर सेन ऐसे हैं जिन्होंने राम की करूणा को प्रदर्शित किया है। उन्होंने हनुमान के मुख से भी जब सीता की व्यथा सुनाई गई तो उस समय राम के हृदय की स्थिति का चित्रण इतना गंभीर किया है कि उसमें राम की करूणा स्वतः ही प्रस्फुटित हो गई है।

**डित्यं तृणं सदविव्वलं जीर्णत्ते सभाः बन्थरम्।**
**परसिंह सोहै तुमं ते रूण्डं पौराणोजित्ये मारुहि अवरूढो॥**

तो प्रवरसेन की जो भावना है वो मानवता के साथ साथ मानवीय हृदय की करूणा को उभार कर प्रस्तुति करती है। मानवता के कारण ही मानव मे जिस संवेदना का उदय संवेदना को उन्होंने प्रकर किया है। इसलिए प्रवर सेन का काव्य भी अत्यधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ। इनके बाद में जो उत्पन्न हुए उनमें भट्ट केवल का ''रावणार्जुन यम'' हमारे सामने पाण्डित्य प्रदान किया गया है लेकिन रामकथा को आधार बनाकर लिखे जाने से ये महाकाव्य भी हमारे लिए अत्यन्त ग्राह्य है।

इसी प्रकार से शास्त्र काव्यों में भट्टि का ''रावण वध'' एक अनुपम काव्य है। इसमें भी पाण्डित्य प्रदर्शन अधिक है। हालांकि राम के चारित्रिक गुणों को माननीय गुणों को उतनी ही प्रशस्यता के साथ उभारा गया है जितना आवश्यक होना चाहिए।

राम कथा एक ऐसी कथा है जिससे मानव जीवन के सभी पक्ष जुडे हुये है। अत-ये नहीं कहा जा सकता कि राम कथा केवल किसी वर्ग विशेष से सम्बद्ध है या किसी वर्ग विशेष को प्रेरणा देती है। लेकिन य ऐसी अनुपम कथा है जो मानव मात्र को जीवन जीने के लिए एक श्रेष्ठ मार्ग का सन्देश देती है। जिस मार्ग पर चलकर मानव चाहे वह पुरुष हो चाहे वह स्त्री हो अपने सम्बंधों को निभाते हुये और माननीय दृष्टि से अपने जीवन को परिपूर्णता की ओर ले जाने में सफल हो सकते है। इस दृष्टि से वाल्मीकी रामायण को आधार बनाकर लिखे गये जितने भी महाकाव्य है और काव्य हैं उनमें हम देखते है कि राम कथा को लोकप्रिय बनाने के लिए जितना प्रयास किया गया उतना प्रयास अपेक्षित था और उस अपेक्षित प्रयास को सफलता मिली और मानव बडे दीर्घकाल तक अनेक प्रकार के संकटों से मुक्त रहा। उदाहरण के लिए राम रावण युद्ध। जिसके लिए कहा गया है - राम रावणयोरिव राम रावणयोरिव। तो ऐसा युद्ध हो जाने पर जो विभीषिका उत्पन्न हुई उससे जो मानवता काल में जाकर के इस प्रकार का युद्ध हुआ जो उस प्रकार की विभीषिका को उत्पन्न करने वाला था। एक दीर्घ समय तक जो चिर शान्ति रही विश्व में और उस चिर शान्ति का कारण ही यही था कि राम कथा इतनी लोकप्रिय रूप में प्रसिद्ध रही उसके कारण सब लोग अपनी मर्यादा में बँधे रहे अपनी सीमाओं में बँधे रहे और अपने जिस मार्ग को लक्ष्य करके चले उस मार्ग से उन्होंने राष्ट्र को भी शांति का संदेश प्रदान किया। आज इसकी महती आवश्यकता है क्योंकि महाभारत के बाद भी जो रामायण और महाभारत ने हमारे को अर्थ काव्यों के रूप में उपदेश दिया और इनको आश्रित करके जो दूसरे महाकाव्य लिखे गये, उन महाकाव्यों ने हमें यही प्रेरणा दी है कि मानव मानवता के लिए है न कि युद्ध के लिए। न इस प्रकार से समाज को हम संगठित रखें परिवार को हम संगठित रखें मानव सुसंगठित हो, माननीय व्यवहारों में किसी भी युद्ध जैसी विभीषिका से न जूझना पडे न ही उससे मानवता को संत्रस्त होना पडे। अत-महर्षि वाल्मीकी का जो संदेश है वो सन्देश एक अमर सन्देश है। इस संदेश को मिथिला के एक कवि भट्ट राम जिन्होंने राम गीत गोविंद भी लिखा है उसमें इन्होंने अच्छी तरह से प्रदर्शित किया है। हमको ये संदेश प्रदान किया गया है कि राम युद्ध के पक्षपाती नहीं थे। अंत समय तक उन्होंने रावण को समझाया। अपने दूत भेजकर रावण को किसी प्रकार का समय देने में समझने के लिए उन्होंने कोई कोता ही नहीं बरती। बहुत समय तक वो इसी राह को देखते रहे कि युद्ध ना हो और कुछ अपना मार्ग बदल ले। लेकिन उसका अहंकार इतना प्रबल था कि वो इसे नहीं बदल सका। यही कारण है कि जब राम - रावण युद्ध के बाद में जब रावण की पराजय हुई और राम विजयी हुए तो

राम युद्ध के बाद में जब रावण की पराजय हुई और राम विजयी हुए तो राम की कीर्ति सब जगह प्रसिद्ध हुई। केवल भारत में ही नहीं भारतवर्ष के बाद आर्यवर्त को जो पूरा हिस्सा था जो बाद में विखण्डित हो गया उस पूरे हिस्से में राम की कीर्ति विद्यमान थी। आज भी विश्व के अन्य देशों में भी राम की कीर्ति का गान किया जा रहा है। वो इसी कारण से कि वाल्मीकी का संदेश ही हमारे लिए एक मात्र ऐसा संदेश है जो हमें मानवता से ओत प्रोत कर सकता है। उसमें जो आदर्श है जो यथार्थ है वो मानव जीवन से इतना संपृक्त हो गया है कि उसमें अंतर नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए वो हमें ये सिखाता है कि आदर्श ही आगे चलकर यथार्थ बन जाते हैं। जब हम आदर्श को सीखेंगे तब हम उसी मार्ग पर चलेंगे वही आगे के लिए आदर्श बन जायेगा। इसलिए आदर्श और यथार्थ में कोई अंतर नहीं है। अंतर केवल पाश्चात्य की दृष्टि में है। हमारे भारतीय चिन्तकों की दृष्टि में आदर्श और यथार्थ के बीच कोई अंतर ही नहीं हैं क्योंकि यथार्थ ही आदर्श बनता है और आदर्श ही जीवन का यथार्थ बनता है। यही वाल्मीकी हमें समझना चाहते है। इसलिए राम की कीर्ति विदेशों में फैली। आधुनिक युग में जो महाकवि हुये उन महाकवियों ने भी राम के चरित्र का गान किया है। आधुनिक महाकवियों में संस्कृत महाकवियों में, आचार्य सत्यव्रत शास्त्री जी ने राम कीर्ति महाकाव्य लिखा और वह महाकाव्य भी आज हमें प्रेरणा देता हैं। वाल्मीकी के ही मार्ग का उनके ही संदेश का प्रवर्तन करता है। जो हमें मानवता की ओर ले जाता है। इसी प्रकार से रिवा प्रसाद चतुर्वेदी का सीता चरितम् एक ऐसा महाकाव्य है जो महिलाओं को अत्यन्त प्रेरणा प्रदान करता हैं।उसमें सीता का जो चरित्र उपस्थापित किया है उसमें महिलाओं के आदर्श के साथ साथ उनकी मर्यादाओं को महिला सशक्तीकरण को बडे अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। वाल्मीकी के जो भी महाकाव्य आश्रित है और वाल्मीकी का जो संदेश है जिसको बताने वाले हैं उनको हमें अपनी दृष्टि से बहुत अच्छी तरह से ग्रहण करना चाहिए। इस व्याख्यान के माध्यम से मेरा यही सन्देश है कि जिसको में कहता हूँ प्रत्येक भारतीय इसे हृदय से ग्रहण करेगा ऐसी आशा के साथ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।